SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मौर्य साम्राज्य का पतन एक अवलोकन

नीलम कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author

नीलम कुमारी, शोधार्थी, इतिहास विभाग,
विनोबा भावे विश्वविद्यालय,
हजारीबाग, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 14/02/2022
Revised on : -----
Accepted on : 21/02/2022
Plagiarism : 02% on 14/02/2022

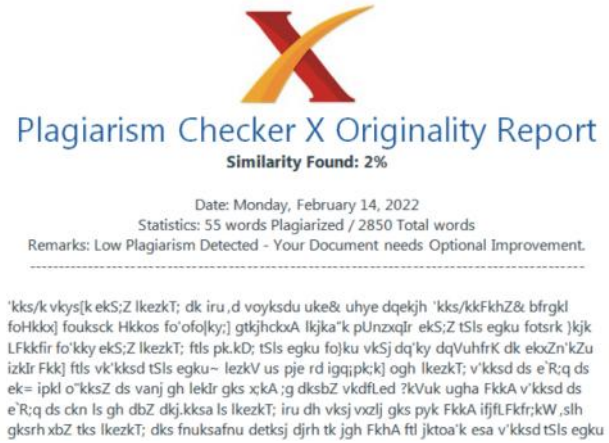
Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 2%

Date: Monday, February 14, 2022
Statistics: 55 words Plagiarized / 2850 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

'kks/k vkys[k ekS;Z lkezkT; dk iru ,d voyksdu uke& uhye dqekjh 'kks/kkFkhZ& bfrgkl foHkkx] fouksck Hkkos fo'ofo|ky;] gtkjhckxA lkjka"k pUnzxqlr ekS;Z tSls egku fotsrk)kjk LFkkfir fo'kky ekS;Z lkezkT; ftls pk.kD; tSls egku fo}ku vkSj dq'ky dqVuhfrK dk ekxZn'kZu izkIr Fkk] ftls vk'kksd tSls egku~ lezkV us pje rd igq;pk;k] ogh lkezkT; v'kksd ds e`R;q ds ek= ipkl o"kksZ ds vanj gh lekIr gks x;kA ;g dksbZ vkdfLed ?kVuk ugha FkkA v'kksd ds e`R;q ds ckn ls gh dbZ dkj.kksa ls lkezkT; iru dh vksj vxzlj gks pyk FkkA ifjfLFkfr;kW ,slh gksrh xbZ tks lkezkT; dks fnuksafnu detksj djrh tk jgh FkhA ftl jktoa'k esa v'kksd tSls egku

शोध सार

चन्द्रगुप्त मौर्य जैसे महान विजेता द्वारा स्थापित विशाल मौर्य साम्राज्य जिसे चाणक्य जैसे महान विद्वान और कुशल कुटनीतिज्ञ का मार्गदर्शन प्राप्त था, जिसे आशोक जैसे महान् सम्राट ने चरम तक पहुँचाया, वही साम्राज्य अशोक के मृत्यु के मात्र पचास वर्षो के अंदर ही समाप्त हो गया। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं था। अशोक के मृत्यु के बाद से ही कई कारणों से साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हो चला था। परिस्थितियाँ ऐसी होती गई जो साम्राज्य को दिनोंदिन कमजोर करती जा रही थी। जिस राजवंश में अशोक जैसे महान शासक पैदा हुआ हो जिसने अपने शासनकाल में आज से लगभग 2200 वर्ष पहले कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को साकार किया। उसने विश्वशांति की दिशा में जो सार्थक प्रयास किये वह आज भी अनुकरणीय है। उसी महान शासक के मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य का छिन्न–भिन्न हो जाना निश्चित रूप से पतन के कारणों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करता है। जब हम मौर्य साम्राज्य के पतन के कारणों का विश्लेषण करते है तो अनेक कारण इनके लिए उत्तरदायी प्रतीत होते हैं। सर्वप्रथम अशोक की मृत्यु के पश्चात् कमजोर उत्तराधिकारियों का होना जो विशाल साम्राज्य को अपने नियंत्रण में रखने में सक्षम नहीं थे। अत्यधिक केन्द्रीयकृत शासन प्रणाली जिसके कारण केन्द्रीय सत्ता के कमजोर पड़ते ही दुरस्थ प्रांत स्वतंत्र व्यवहार करने लगे। उत्तराधिकार के नियमों का अभाव जिसके कारण शासक की मृत्यु के बाद सता प्राप्ति हेतु संघर्ष छिड़ जाता था जो साम्राज्य की जड़ो को लगातार कमजोर करता था। विशाल साम्राज्य के शासनतंत्र चलाने हेतु खर्चा की भरपाई के लिए जनता पर करों का बोझ अत्यधिक था जिससे जनता में धीरे–धीरे असंतोष बढ़ रहा था। प्रांतपतियों के अत्याचार तथा उनमें स्वतंत्रता की प्रवृति के कारण भी साम्राज्य पतन की ओर तेजी से अग्रसर हुआ। उन दिनों राष्ट्रीयता की

भावना का भी अभाव था जिसके कारण सभी अपने–अपने निजी हितों की पूर्ति में लगे रहते थे। कहीं–कहीं अशोक की नीतियाँ भी पतन के लिए उत्तरदायी प्रतीत होती है। परन्तु यह भी विचारणीय है कि जिन नितियों को अपनाकर अशोक ने तत्कालीन इतिहास में एक मिसाल कायम की उन्हीं नीतियों के पतन को अवश्यभावी बना दिया। इन सबके अतिरिक्त बाह्य आक्रमण, आर्थिक संकट आदि भी प्रमुख कारण थे जिससे मौर्य साम्राज्य तेजी से पतन की ओर अग्रसर हुआ।

मुख्य शब्द

मौर्य साम्राज्य, पतन, उत्तराधिकारी, चाणक्य, चन्द्रगुप्त मौर्य, अशोक.

परिचय

प्राचीन भारत के इतिहास में गंगाघाटी के क्षेत्र का अत्यन्त हीं महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारत में आर्य सभ्यता के विकास के साथ ही धीरे–धीरे राजनीतिक संस्थाओं का विकास हुआ। फलतः जन से जनपद और जनपद से महाजनपद का निर्माण हुआ। कालान्तर में इन महाजनपदों में प्रतिद्वंद्विता का जन्म हुआ। इस प्रतिद्वंदिता में मगध सबसे शक्तिशाली महाजनपद के रूप में उभरा। अपने योग्य शासकों के अधीन लगातार उत्कर्ष करता हुआ चन्द्रगुप्त मौर्य के समय एक विशाल साम्राज्य के रूप में सामने आया। इस विशाल साम्राज्य निर्माण में चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरू कौटिल्य का अत्यंत हीं महत्वपूर्ण योगदान रहा है। महान विजेता चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा स्थापित साम्राज्य को उसके पौत्र अशोक महान ने और भी विस्तृत किया तथा विलक्षण प्रतिमा और योग्यता से जनकल्याण और अहिंसात्मक कार्यो की ऐसी मिशाल कायम की जिसका उदाहरण तत्कालीन विश्व में कहीं नही मिलता है। अशोक की मृत्यु के पश्चात् अगले 50 वर्षो में सात शासक हुए परन्तु किसी में भी इतनी योग्यता नहीं थी कि विशाल साम्राज्य को संभाल पाते। फलस्वरूप सम्पूर्ण साम्राज्य में अव्यवस्था फैल गई और अत्यंत ही नाटकीय ढ़ंग से मौर्य साम्राज्य का विघटन हो गया।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत आलेख विश्लेषणात्मक एवं वर्णनात्मक प्रकृति का है। इसके लिए मुख्यतः द्वितीयक स्त्रोतों का सहारा लिया गया है। इस शोधकार्य में मुख्यतः प्रकाशित ग्रंथ विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं में छपे लेख प्रकाशित एवं अप्रकाशित शोधकार्य को आधार बनाया गया है।

अवलोकन

मौर्य साम्राज्य के पतन के बारे में अनेक विद्धानों ने अलग–अलग मत व्यक्त किये हैं। जिस विशाल साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने गुरू चाणक्य के मार्गदर्शन और सहायता से किया, अशोक ने उसे विस्तृत करते हुए जिसकी ख्याति को विदेशों में भी फैलाया, वही साम्राज्य अशोक की मृत्यु के बाद पतन की ओर कैसे तेजी से अग्रसर हुआ। यह एक ऐसा प्रश्न है जो स्वतः ही पतन के कारणों के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करता है। जिन विशेषताओं के लिए मौर्य साम्राज्य प्राचीन भारत के इतिहास में विशिष्ट स्थान रखता है उन्हीं में मौर्य साम्राज्य की पतन के बीज भी निहित थे। प्रो. रोमिला थापर के शब्दों में मौर्य साम्राज्य के पतन की संतोषजनक व्याख्या यह कह कर नहीं की जा सकती कि सैनिक निष्क्रियता, प्रतिक्रिया, लोकप्रिय विद्रोह, आर्थिक दवाब आदि के कारण साम्राज्य का पतन हो गया। पतन के कारण मौलिक थे जिनका मौर्यकालीन जीवन से संबंध था।[1]

मौर्य साम्राज्य की विशालता भी उसके पतन के प्रमुख कारणों में एक है। मौर्य साम्राज्य अशोक के काल में अपने चरमोत्कर्ष पर थी। उत्तरपश्चिम में मौर्य साम्राज्य की सीमा हिन्दूकुश तक पहुँचती थी। दक्षिण अफगानिस्तान और सीमांत प्रांत भी मौर्य साम्राज्य के अधीन थे। दक्षिण के कुछ भागों के अतिरिक्त आज का लगभग संपूर्ण अविभाजित भारत मौर्य साम्राज्य के अधीन था। इस विशाल साम्राज्य पर नियंत्रण रखना एक अत्यंत हीं कठिन कार्य था। अयोग्य उत्तराधिकारियों के समय यह कार्य और भी दुरूस्त हो गया। दुर्भाग्यवश अशोक के बाद कोई भी शासक

इतना योग्य नहीं था जो इस विशाल साम्राज्य को संभाल पाता। फलतः साम्राज्य का विभाजन हो गया। पूरे साम्राज्य में अशांति और अराजकता फैल गई। परिणाम स्वरूप मगध साम्राज्य पतन की ओर तेजी से अग्रसर हुआ।

अशोक की मृत्यु के बाद मौर्य साम्राज्य को संभालने के लिए एक योग्य उत्तराधिकारी की आवश्यकता थी जो अपने प्रतिभा से मौर्य साम्राज्य की एकता और अखंडता को बनाये रखते। परन्तु उसके उत्तराधिकारियों ने साम्राज्य का विभाजन कर दिया। सत्ता प्राप्त करने की चाह में उत्तराधिकारी के युद्ध को बढ़ावा दिया। फलतः साम्राज्य कमजोर होकर विघटित हो गया। कल्हण ने 'राजतरंगिणी' में लिखा है कि– ''अशोक की मृत्यु के पश्चात् जालौक जो कि इसके पुत्रों में से एक था, कश्मीर में स्वतंत्र बन बैठा उसने कन्नौज के मैदान को जीत लिया'' ।[2] तारानाथ के अनुसार– वीरसेन अशोक का पुत्र था जो गांधार का स्वतंत्र शासक बन गया।

हेमचन्द्र रायचौधरी के अनुसार ''मौर्य के दुरस्थ प्रांतों में शासक अत्याचारी थे'' ।[3] दिव्यावदान में बिन्दुसार एवं अशोक के समय विद्रोह होने का उल्लेख है। जनता ने इनकी शिकायत भी अशोक और कुणाल से की थी। इस बात की पुष्टि अशोक के कलिंग अभिलेख से भी होती है। इसे रोकने हेतु अशोक ने प्रति पाँचवे वर्ष एक उच्चाधिकारी भेजने की व्यवस्था की थी। फलतः अशोक के समय तक दुरस्थ प्रांतों के प्रांतपति नियंत्रण में रहे परन्तु उसकी मृत्यु के बाद कमजोर उत्तराधिकारियों के समय में कई प्रांतपति स्वतंत्र होकर मनमानी करने लगे। दक्षिणापथ और कलिंग आदि प्रदेश तो जल्द ही स्वतंत्र भी हो गये। इस प्रकार प्रांतपतियों के अत्याचार से जनता त्रस्त हो गई और जिस कल्याणकारी राज्य की स्थापना अशोक ने की थी उसमें सर्वत्र अशांति और अराजकता फैल गई।

मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए अशोक की नीतियों को भी उत्तरदायी माना जाता है। हेमचंद्र रायचौधरी का मत है कि अशोक की शांतिवादी नीतियों की साम्राज्य की शक्ति को क्षीण करने के लिए उत्तरदायी थी। अशोक ने कलिंग युद्ध के बाद साम्राज्यवादी नीति का परित्याग कर धर्म विजय की नीति को अपनाया जिसके कारण सम्पूर्ण प्रक्रिया ही परिवर्तित होकर साम्राज्य को पतन के कगार पर पहुँचा दिया। परन्तु अशोक की शांतिवादी नीतियों को पतन के लिए उत्तरदायी मानना तर्कसंतग प्रतीत नहीं होता है क्योंकि कलिंग युद्ध के बाद भी अशोक पूर्ण रूपेण शांतिवादी नहीं बन पाया था। इसकी पुष्टि इस तथ्य से होती है कि उसने न तो मौर्य सेना का विघटन किया और न ही प्राणदंड को समाप्त किया था। वह अपने विशाल साम्राज्य को शक्ति के बल पर नहीं बल्कि प्रेम और सहृदयता की भावना से नियंत्रण में रखना चाहता था। अशोक की शांति प्रियता व्यवहारिक थी। उसने केवल साम्राज्यवादी नीति का परित्याग किया था और अहिंसा का प्रचार किया। तेरहवें शिलालेख के अनुसार अशोक ने आटविक जाति को विद्रोह के प्रति चेतावनी दी थी जो एक मजबूत सैन्य शासक हीं कर सकता था।

अनेक विद्वान अशोक की धार्मिक नीति को मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए उत्तरदायी मानते है। प्रो. रोमिला थापर के शब्दों में ''अशोक की धम्म की नीति सफल नहीं हुई'' ।[4] महामहोपाध्याय हरप्रसाद शास्त्री ने भी अशोक की धार्मिक नीति को साम्राज्य के पतन का मुख्य कारण बताया है। उनके अनुसार ''अशोक की धम्म की नीति बौद्धों के पक्ष में थी और ब्राह्मणों के विशेषाधिकारों व उनके सामाजिक श्रेष्ठता की स्थिति पर कुठाराघात करती थी। अतः ब्राह्मणों में प्रतिक्रिया हुई जिसकी चरम सीमा पुष्य मित्र शुंग के विद्रोह में दृष्टिगोचर होती है'' ।[5] परन्तु प्रसिद्ध इतिहासकार हेमचंद्रराय चौधरी ने इसका विरोध किया है। उनका कहना है कि एक तो अशोक ने पशुबली पर पूर्ण प्रतिबंध नहीं लगाया था और फिर स्वयं ब्राह्मण ग्रंथों में भी यज्ञादि अवसरों पर पशुबली के विरोध के स्वर स्पष्ट सुनाई दे रहे थे। अतः अशोक के तथाकथित प्रतिबंध को बढ़ाचढ़ा कर दिखाया गया। महामात्रों के दायित्व में ऐसा कोई उल्लेख नहीं है जिसे ब्राह्मण विरोधी कहा जाए। वे तो ब्राह्मण श्रमण आदि सभी के कल्याण के लिए थे। पुष्यमित्र शुंग के विद्रोह को धार्मिक विद्रोह मानना उचित नहीं है। अशोक के शिलालेखों से भी यह स्पष्ट है कि वह ब्राह्मणों का आदर करता था। वह ब्राह्मण एवं श्रमण दोनों को दान देता था। साथ ही उसके काल में ब्राह्मणों से संघर्ष का कोई उदाहरण नहीं मिलता। कल्हण के मतानुसार भी जलौक के ब्राह्मणों से अच्छे संबंध थे। स्वयं पुष्यमित्र शुंग की सेनापति के रूप में नियुक्ति हीं अशोक के ब्राह्मणों के प्रति आदर को व्यक्त करता है।

कुछ विद्वानों ने मौर्य साम्राज्य के पतन का एक प्रमुख कारण अर्थव्यस्था का दबाब में होना बताया है। मौर्य

अर्थव्यवस्था लगातार बिगड़ती जा रही थी। इतने बड़े साम्राज्य का व्यय वहन करने के लिए आर्थिक स्थिति मजबूत होना अति आवश्यक था। अशोक की दानशीलता और जनकल्याणकारी कार्यो पर भी अत्यधिक धन व्यय हो रहा था। अशोक के इन कार्यो से भी अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त दबाब पड़ा, परन्तु प्रो. योगेन्द्र मिश्र ने अपनी पुस्तक में अशोक को इन आरोपों से मुक्त कर दिया है। अशोक दान अवश्य देता था। परन्तु उसकी दानशीलता के कारण खजाना खाली हो गया यह कहना उचित नहीं है। अशोक के अभिलेखों से यह पता चलता है कि वह प्रजा के कल्याण के लिए हमेशा प्रयत्नशील रहता था। रिक्त राजकोष के द्वारा यह कार्य संभव नहीं था। वास्तव में चन्द्रगुप्त मौर्य ने अपने विशाल साम्राज्य के लिए एक विशाल प्रशासनिक तंत्र बनाया था। अशोक के समय में उसमें धम्म महामात्र जैसे नये अधिकारी भी जुड़ गये। अशोक के कल्याणकारी कार्यों से राज्य के खर्चों में तो वृद्धि हुई परन्तु योग्य शासकों के काल में संतुलन बना रहा। जैसे हीं उत्तराधिकारी कमजोर हुए आय का स्त्रोत बढ़ाने हेतु करों का बोझ बढ़ाया गया जिसके कारण जनता में असंतोष बढ़ने लगा। डी. डी. कौशाम्बी ने भी यह मत व्यक्त किया है कि परवर्ती मौर्यकालीन आहत सिक्कों में खोटेपन के आधार पर यह मत व्यक्त किया गया है। परन्तु रोमिला थापर ने माना है कि सिक्कों में मिलावट अर्थव्यवस्था पर दबाब साबित नहीं करता। उत्तरकालीन मौर्यों के शासन में क्षीण नियंत्रण के कारण सिक्कों में मिलावट होने लगी। विशेषकर उन प्रांतों में जो साम्राज्य से अलग हो गये थे। हो सकता है कि चाँदी की मांग बढ़ने के कारण भी चाँदी के सिक्कों में मिलावट की गई होगी। हस्तिनापूर और शिशुपालगढ़ की खुदाई से जो मौर्यकालीन सिक्के प्राप्त हुए हैं वे एक विकसित अर्थव्यस्था एवं भौतिक समृद्धि का परिचय देते हैं।

भारत पर होने वाले बाह्य आक्रमण भी मौर्य साम्राज्य की जड़ो को कमजोर कर रहे थे। यूनानी लेखक पोलीवियस के विवरण तथा गार्गीसंहिता से भी यूनानियों के आक्रमण का आभाष मिलता है। गार्गीसंहिता में कहा गया है कि ''तब अनैतिक किन्तु बलशाली यूनानी साकेत पांचाल और मथुरा को विजय करते हुए कुसुमध्वज पहुँचेगें। इसके बाद वे पुष्पपुर (पाटलीपुत्र) पहुँचकर निश्चय ही सभी प्रांतों को अस्तव्यस्त कर डालेंगें''।[6] यूनानी सेना का सामना न कर सकने के कारण निश्चय ही मौर्य शासक जनता की नजरों में गिर गये होंगे एवं उनकी शक्ति भी क्षीण हुई होगी।

मौर्य साम्राज्य जितना विशाल था उसे नियंत्रण में रखने हेतु उचित यातायात व्यवस्थ का अभाव था। दुरस्थ प्रांतों द्वारा विद्रोह की स्थिति में उसे कुचलने हेतु समय पर सहायता उपलब्ध कराना मुश्किल काम था। इसका लाभ दुरस्थ प्रांत के प्रांतपतियों ने उठाया तथा केन्द्रीय शक्ति के कमजोर पड़ते ही स्वयं को स्वतंत्र घोषित कर दिया। हालांकि अशोक ने यातायात और संचार व्यवस्था को सुढ़ृढ़ बनाने हेतु कई ठोस कदम उठाये थे परन्तु इतने बड़े साम्राज्य के लिए वह पर्याप्त नहीं थे।

मौर्य साम्राज्य पूर्णतः केन्द्रीयकृत था। इतने विशाल साम्राज्य पर एकमात्र केन्द्र पाटलीपुत्र से नियंत्रण होता था। योग्य शासकों के समय में तो यह व्यवस्था ठीक थी परन्तु कमजोर शासकों के समय इतने बड़े साम्राज्य पर एक केन्द्र से नियंत्रण रखना दुरूह कार्य था। रोमिला थापर ने भी केन्द्रीयकृत प्रशासन को मौर्य साम्राज्य के पतन का बड़ा कारण माना है। उनका विचार है कि ''एक साम्राज्यवादी ढाँचे के लिए दो मुलभूत बातें आवश्यक है– सुसंगठित प्रशासन तथा प्रजा की राजनीतिक निष्ठा मौर्या का प्रशासन यद्यपि व्यवहारिक दृष्टि से सुसंगठित था, उसमें एक बुनियादी कमजोरी थी जिसके कारण उसका असफल सिद्ध होना अवश्यभावी था। इस प्रणाली में नौकरशाही का बहुत ज्यादा केन्द्रीयकरण था जिसमें मूल केन्द्रबिन्दु शासक था और सारी निष्ठा का लक्ष्य व्यक्तिगत रूप से राजा होता था। राजा के परिवर्तित होने का अर्थ निष्ठा की नए सिरे से स्थापना या उससे भी बुरी बात अधिकारियों का परिवर्तन था क्योंकि नियुक्तियों की प्रणाली निरंकुश थी''।[7] इस प्रकार की शासन व्यवस्था में शीर्ष पर बैठा व्यक्ति का नियंत्रण ढ़ीला पड़ते ही सम्पूर्ण तंत्र का ढ़ह जाना निश्चित है। रोमिला थापर ने मौर्यो के पतन के लिए जनता में राष्ट्रीयता की भावना के अभाव को भी एक कारण माना है। परन्तु वास्तव में यदि देखा जाए तो मौर्य इतिहास के युग में राजनीतिक परम्परा एवं संस्थायें अपनी प्ररम्परा एवं संस्थायें अपनी प्रारंभिक अवस्था में थी। ऐसे समय में जनता में व्यापक राष्ट्रवाद और देशभक्ति की भावना की कल्पना नहीं की जा सकती। खासकर निरंकुश

राजतंत्र के युग में आज के जैसी देशभक्ति और राष्ट्रीयता की कल्पना भी बेमानी है।

प्रो. रामशरण शर्मा ने भी अपनी पुस्तक ''प्राचीन भारत'' में मौर्य साम्राज्य के पतन के लिए साम्राज्य की भौतिक श्रेष्ठताओं में कमी को प्रमुख कारण माना है। उनका मानना है कि साम्राज्य विस्तार होने पर मगध की विशेषतायें भी अन्य क्षेत्रों में पहुँची। इन्हीं विशेषताओं के दम पर तथा मगध से प्राप्त भौतिक संस्कृति के आधार पर नये राज्यों को स्थापित एवं विकसित किया जा सका। लौहे के औजारों और हथियारों का बाह्य प्रांतों में नियमित प्रयोग तथा मौर्य साम्राज्य का ह्रास एवं पतन साथ–साथ हुआ।

निष्कर्ष

इस प्रकार मौर्य साम्राज्य जिसे चन्द्रगुप्त मौर्य ने खड़ा किया, बिन्दूसार ने संभाला, अशोक ने चरम तक पहुँचाया, बृहद्रथ तक आकर 184 ई0 पूर्व में धराशायी हो गया। इसके साथ ही साम्राज्यवादी शासन का पहला प्रयोग समाप्त हो गया। बाद के शताब्दियों में और भी कई प्रयोग हुए परन्तु सभी की परिस्थितियाँ अलग–अलग थी। मौर्यो को जिस केन्द्रीयकृत शासन व्यवस्था के लिए जाना जाता है, उसी व्यवस्था ने उसे पतनोम्मूख भी बना दिया। इतिहास गवाह है कि जिस साम्राज्य का उत्थान होता है अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँचने के बाद उसका पतन भी होने लगता है। इसी तरह मौर्यों का पतन भी होना हीं था क्योंकि जिसका उदय हुआ है उसका पतन भी होगा यह एक शाश्वत सत्य है। यद्यपि अशोक की नीतियों को इसके लिए उत्तरदायी ठहराया जाता है जो पूर्णतः सत्य प्रतीत नहीं होता क्योंकि यदि अशोक शांतिप्रियता की जगह रक्तपात्र की नीति पर भी चलता, तब भी कुछ समय पहले या बाद साम्राज्य का विनाश तो होना ही था। लेकिन अशोक ने अपने कार्यो से इतिहास में जो अपना गौरवपूर्ण स्थान बनाया है उसका उदाहरण तत्कालीन विश्व में कहीं भी दिखाई नहीं देता। अशोक की नीतियाँ आज भी प्रसांगिक है और भारत के आध्यात्मिक संस्कृति के गौरव को संपूर्ण विश्व में प्रतिष्ठापित करती है। वस्तुतः मौर्य साम्राज्य के पतन के मौलिक कारणों में कमजोर उत्तराधिकारी, विशाल साम्राज्य, आर्थिक कमजोरी, ब्राह्य आक्रमण, प्रांतपतियों के अत्याचार आदि ही मुख्य रूप से उत्तरदायी प्रतित होते हैं।

संदर्भ सूची

1. थापर रोमिला, (1997) अशोक और मौर्य साम्राज्य का पतन, अनुवादः डी.आर. चौधरी, प्रभा यादव, ग्रन्थशिल्पी, नई दिल्ली।
2. सिन्हा विपिन बिहारी, (2014) प्राचीन भारत का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली।
3. वर्मा दीनानाथ, (2007) *प्राचीन भारत,* ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली।
4. जैन के.सी. जैन, (2012) *प्राचीन भारत का इतिहास,* यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली।
5. परूथी आर.के., (2011) *प्राचीन भारत का इतिहास,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
6. खन्ना कैलाश, (2008) *प्राचीन भारत का इतिहास,* अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. झा द्विजेन्द्र नारायण एवं श्रीमाली कृष्णमोहन, (2000) *प्राचीन भारत का इतिहास,* हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली।
8. महाजन विद्याधर, (2001) *प्राचीन भारत का इतिहास,* एस. चंद एण्ड कम्पनी लि., नई दिल्ली।
9. थापर रोमिला, (1998) *भारत का इतिहास,* राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. चौधरी राधाकृष्ण, (1999) *प्राचीन भारत का राजनीतिक एवं सांस्कृतिक इतिहास,* भारती भवन, पटना।
11. मौर्य आर.एन., (2002) *मौर्य साम्राज्य का इतिहास,* लार्ड बुद्धा वेलफेयर सोसायटी, इलाहाबाद।
12. मजूमदार रमेश चन्द्र, (1995) *प्राचीन भारत,* मोतीलाल बनारसी दास, नई दिल्ली।

पाद लेख

1. थापर रोमिला, *अशोका एण्ड डिक्लाइन ऑन द मौर्याज,* पृ.सं. 207।
2. झा एवं श्रीमाली, *प्राचीन भारत का इतिहास,* पृ.सं. 191।
3. झा एवं श्रीमाली, *प्राचीन भारत का इतिहास,* पृ.सं. 193।
4. थापर रोमिला, *भारत का इतिहास,* पृ.सं.– 64–65।
5. झा एवं श्रीमाली, *प्राचीन भारत का इतिहास,* पृ.सं.– 191।
6. सिन्हा विपिन बिहारी, (2014) प्राचीन भारत का इतिहास, ज्ञानदा प्रकाशन नई दिल्ली, पृ.सं. 166।
7. थापर रोमिला, *प्राचीन भारत का इतिहास,* पृ.सं. 79।

****